कहानियों के माध्यम से लेखन कौशल विकास के कुछ अनुभव

हुमा नाज़

आज भी प्राथमिक स्तर पर कक्षा पाँच तक आने के बावजूद अधिकांश बच्चे ऐसे हैं जो बुनियादी भाषाई कौशल हासिल करने में पीछे हैं। इस लेख में बुनियादी भाषाई कौशलों को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक स्तर पर कहानियों के माध्यम से बच्चों में लेखन कौशल की बेहतरी के लिए किए जाने वाले प्रयासों का विवरण प्रस्तुत है। लेख में शामिल बच्चों के लेखन के विविध नमूने और उनका संक्षिप्त विश्लेषण बच्चों की विभिन्न मुद्दों की समझ और दृष्टि को भी दर्शाता है। -सं.

भूमिका

कई शालाओं में बच्चों के पठन-लेखन को बढ़ावा देने के पर्याप्त संसाधन आज की स्थिति में उपलब्ध होते हैं। जैसे– बाल साहित्य की ढेर सारी किताबें। मैं कक्षा पाँचवीं के बच्चों के साथ कार्य कर रही थी। उनकी कक्षा में भी विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत मिली ढेर सारी किताबें मौजूद थीं। कुछ बच्चों को मैंने लंच के बाद, या ख़ाली समय में किताबें पढ़ते देखा। असल में, मैं गणित विषय पर कार्य कर रही थी, लेकिन कक्षा शिक्षण के बाद जिज्ञासावश बच्चों से किताबों और पढ़ने-लिखने पर कुछ चर्चा हुई। बच्चों ने बताया कि उनको पढ़ना अच्छा लगता है। जब मैंने पूछा कि कक्षा में मौजूद किताबों में कौन-कौन सी किताबें तुमने अब तक पढ़ी हैं, तब कुछ बच्चों ने झट से हाथ उठाते हुए एक-दो किताबों का नाम लेते हुए कहा कि हमने पढ़ी हैं, हमने पढ़ी हैं। मैंने फिर पूछा कि तुम्हारी कक्षा में इतनी सारी किताबें हैं। सोचो उन किताबों में क्या-क्या होगा? बच्चों ने कहा (अपनी भाषा में), बहुत कुछ है। कछुए की कहानी है, ख़ूब सारी कहानियाँ हैं, कविताएँ हैं, लालू पीलू की भी कहानी है। बच्चे अपनी बात रख ही रहे थे कि दो बच्चे, जो शायद अकसर उन किताबों को पढ़ते होंगे, किताबों के ढेर से वे कुछ किताबें उठाकर ले आए जो उन्होंने पढ़ी थीं। आगे बातचीत में उन्होंने यह भी बताया कि उन्हें कहानियाँ बहुत अच्छी लगती हैं। मैंने उन्हें उनकी पढ़ी कहानियों के अनुभव लिखने को कहा। एक-दो बच्चों ने लिखने की कोशिश की, लेकिन अधिकांश बच्चों ने स्वतंत्र रूप से लिखने में झिझक ज़ाहिर करते हुए अपने अनुभव लिखने में ज़्यादा रुचि नहीं दिखाई।

इस छोटी-सी बातचीत से शायद आप भी अपनी कक्षा और बच्चों की विशाल जिज्ञासाओं की कल्पना कर सकते हैं। अकसर देखा जाता है कि बच्चे पाठ्यपुस्तक पढ़ लेते हैं, पाठ के आधार पर प्रश्न का अभ्यास, और उनके उत्तर भी लिख लेते हैं, लेकिन अगर उसी पाठ के आधार पर या कुछ प्रश्नों / विषयों पर अपने शब्दों में बोलने और लिखने की बात आए, बच्चे हिचक और कठिनाई महसूस करते हैं। शायद आपने भी कक्षा शिक्षण के दौरान ऐसा अनुभव किया हो! ऐसा क्यों होता है, इसे समझने के लिए दो सवालों पर ग़ौर करते हैं। पहला, क्या सिर्फ़ किसी पाठ के प्रश्नों के उत्तर दे देने को ही बच्चों में लेखन कौशल माना जाए? और यदि ऐसा है तो महज़ पाठ पढ़ा देने और फिर

उसके प्रश्न अभ्यास करा देने से लेखन कौशल सम्भव होगा। लेकिन हम पाते हैं कि यह लेखन के लिए काफ़ी नहीं होता। कई बच्चे प्रश्न के उत्तर तो लिख लेते हैं, लेकिन वे किसी दिए गए नए विषय पर न तो कुछ सोच पाते हैं, न ही लिख पाते हैं। मुझे लगता है, लेखन कौशल का मतलब बच्चों द्वारा स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करने से है। और इसलिए इसके अभाव में जब किसी भी प्रकार के आकलन सर्वे में हमारे बच्चों से ऐसे सवाल किए जाते हैं, वो स्वतंत्र अभिव्यक्ति में कठिनाई महसूस करते हैं। इसलिए बतौर शिक्षक हमें हमारी कक्षा के बच्चों के लेखन में वो सारे अवसर शामिल करने की ज़रूरत है जो उन्हें स्वतंत्र रूप से विचार करने, अपने अर्थ गढ़ने और अपने शब्दों में व्यक्त करने के मौक़े दें।

कार्य की शुरुआत

बच्चों के साथ हुई बातचीत के बाद मेरे मन में सवाल उठ रहा था कि किताबों के इस्तेमाल या कहानियों के माध्यम से कैसे पठन और लेखन पर कार्य किया जाए। स्कूल में बच्चा लगभग 5-6 घण्टे समय बिताता है। इन 6 घण्टों में कोई भी एक घण्टा चुना जा सकता है, जब बच्चे स्वतंत्र रूप से कुछ पढ़ें-लिखें। हमने यहाँ बच्चों के साथ सहमति बनाते हुए तय किया कि स्कूल समय का आख़िरी घण्टा हम लोग कुछ किताबें पढ़ने और अपनी कहानियाँ बनाने में देंगे, और रोज़ 3 से 4 बजे के बीच स्वतंत्र रूप से पठन और लेखन का कार्य करेंगे।

बच्चों के साथ समूह में कहानी सुनना-सुनाना

इस सन्दर्भ में पहले दिन बच्चों के साथ सर्कल में कहानी सुनाई गई। बच्चों ने पुस्तकालय की किताब से कहानी पढ़ी, और फिर इसे सभी को पढ़कर सुनाया गया। कहानी के दौरान बीच-बीच में बच्चों के साथ चर्चा भी की गई कि यदि कहानी में तुम होते तो क्या करते? कहानियों के बीच बच्चों से सवाल करने का उद्देश्य इस बात को समझना था कि क्या वो स्वयं अपनी कल्पना के अनुसार कहानी बदल सकते हैं, या नई कहानी बना सकते हैं। लगभग सभी बच्चों ने सुनीं कहानियों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ दीं। मसलन, उनको कहानी कैसी लगी; कहानी में कौन-कौन से पात्र हैं; कहानी में उन्हें अगर कोई बदलाव करना हो तो क्या करेंगे; आदि।

बच्चे लेखन से कैसे जुड़ें?

ये बच्चे पहले सिर्फ़ पाठ के प्रश्नोत्तर लिखते थे। इसलिए उनमें अक्षर-मात्रा की समझ थी। कुछ बच्चे पढ़ भी लेते थे, लेकिन जब उन्हें अपने विचार लिखने और सबके साथ साझा करने को कहा गया, उनमें थोड़ी झिझक थी। दूसरे दिन कार्य को आगे बढ़ाते हुए शुरुआत कुछ बातचीत से की गई। जैसे–

मैं : "हम सबने दूसरों की लिखी कहानियाँ पढ़ीं। क्या तुमने कभी अपनी लिखी कहानी पढ़ी है? क्या हम ख़ुद अपनी कहानियाँ लिख सकते हैं?"

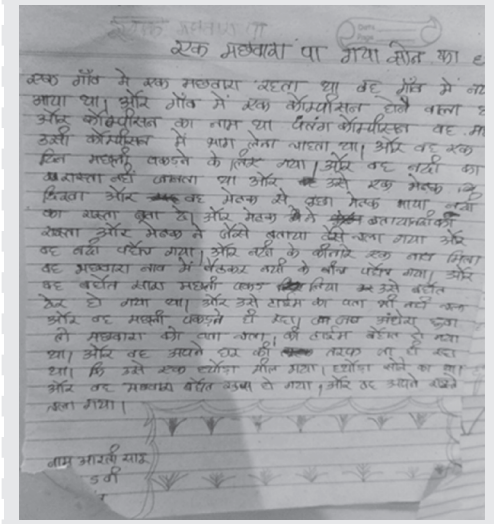

एक मछवारा पा गया सोन का ह

एक गाँव मे एक मछवारा रहता था वह गाँव मे नया आया था। और गाँव में एक कॉम्पीसन होने वाला था और कॉम्पीसन का नाम था पतंग कॉम्पीसन वह उसी कॉम्पीसन में भाग लेना चाहता था। और वह एक दिन मछली पकड़ने के लिए गया। और वह नदी का रास्ता नहीं जानता था और उसे एक मेंढक दिखा और वह मेंढक से पूछा मेंढक भाया नदी का रास्ता कहाँ है। और मेंढक ने बताया नदी की रास्ता और मेंढक ने जैसे बताया वैसे चला गया और वह नदी पहुँच गया। और नदी के किनारे एक नाव मिला वह मछवारा नाव में बैठकर नदी के बीच पहुँच गया। और वह बहुत सारा मछली पकड़ लिया उसे बहुत [illegible] हो गया था। और उसे टाइम का पता भी नहीं चला और वह मछली पकड़ते ही रहा। जब अंधेरा हुआ तो मछवारा को पता चला, की टाइम बहुत हो गया था। और वह अपने घर की तरफ जा ही रहा था। कि उसे एक हथौड़ा मिल गया। हथौड़ा सोने का था। और वह मछवारा बहुत खुश हो गया, और घर [illegible] चला गया।

नाम आरती साहू
5वी

बच्चे : "हाँ, हम लोग भी लिख सकते हैं। जैसे– कछुवा वाली और बन्दर वाली कहानी।"

मैं : "क्या कुछ शब्दों से तुम अपनी कहानियाँ बना सकते हो?"

बच्चे : "हाँ, बनाबो। बच्चों ने अपनी भाषा (छत्तीसगढ़ी) में कहानी बनाने में थोड़ी उत्सुकता दिखाई।"

इस बातचीत के बाद सभी बच्चों को कुछ शब्द दिए गए। उद्देश्य यह था कि बच्चे इन शब्दों को अपने अनुभवों से जोड़कर वाक्यों में प्रयोग करते हुए अपने मन से कुछ कहानी बना सकें।

इस प्रक्रिया में सभी बच्चों ने 2–3 दिन कार्य किया। पहले दिन सभी ने नदी, पतंग, मेंढक, हथौड़ी से, और दूसरे दिन पहाड़, टोकरी, नाव, भालू, आदि शब्दों से कहानियाँ बनाईं। लगभग सभी बच्चे व्यक्तिगत रूप से कहानी बनाने की प्रक्रिया से जुड़े।

कहानियों के आधार पर बच्चों का लेखन

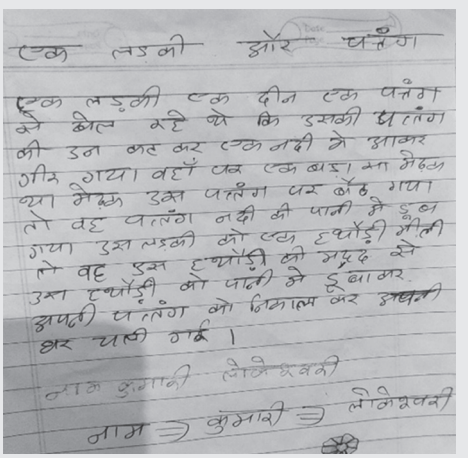

इन 2 दिनों में जो कुछ हुआ उसे बच्चों की लेखन के प्रति रुचि, और उनके विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति की एक प्रक्रिया के तौर पर ज़रूर समझा जा सकता है। यहाँ मैंने बच्चों की बनाईं कहानियों के कुछ उदाहरण लेते हुए उनके लेखन कौशल का विश्लेषण करने की कोशिश की है। बच्चों की कल्पनाशीलता और रचनात्मकता को उनकी कहानियों के आधार पर समझा जा सकता है। जैसे–

1. **शब्द संगठन और वाक्य संरचना** : आरती, जो कक्षा 5 की छात्रा है, ने नदी, पतंग, मेंढक, हथौड़ी, आदि शब्दों से 'एक मछवारा पा गया सोने का हथौड़ा' कहानी बनाई। इस लेखन में आरती ने शब्दों से वाक्यों का निर्माण किया, एक वाक्य से दूसरे वाक्य का जुड़ाव बनाया, अँग्रेज़ी के शब्दों को हिन्दी में लिखने का प्रयास किया, जैसे– कॉम्पिटिशन को कॉमपिसन लिखा। उसने शब्दों के साथ भाव भी जोड़े, जैसे– 'मेंढक भैया'। लेखन में मात्राओं की समझ से जुड़ी ग़लतियाँ भी नज़र आईं। इससे समझ आया कि मात्राओं पर आगे कार्य करना चाहिए।

2. **लेखन और तार्किकता** : लेखन में संरचना और तार्किकता की उपस्थिति भी महत्त्वपूर्ण है। लोकेश्वरी ने अपनी कहानी में एक लड़की और उसके पतंग उड़ाने के दौरान हुई घटना को इस तर्क के साथ लिखा कि पतंग पर मेंढक के बैठने से पतंग पानी में डूब गई। इस लेख से हम बच्चों की तर्क

एक लड़की और पतंग।

एक लड़की एक दीन एक पतंग को खेल रहे थे कि उसकी पतंग की डन कट कर एक नदी मे आकर गीर गया। वहाँ पर एक बड़ा सा मेंढक था। मेंढक उस पतंग पर बैठ गया तो वह पतंग नदी की पानी मे डूब गया। उस लड़की को एक हथौड़ी मीली तो वह उस हथौड़ी की मदद से उस हथौड़ी को पानी मे डूबाकर अपनी पतंग को निकाल कर घर चली गई।

नाम कुमारी लोकेश्वरी

नाम = कुमारी = लोकेश्वरी

की क्षमता को भी समझ सकते हैं। तर्कपूर्ण लेखन के लिए ऐसे कुछ और सवाल आगे की प्रक्रिया में शामिल किए जा सकते हैं।

3. **अर्थपूर्ण लेखन और संवेदनशीलता** : यहाँ एक अन्य बच्चे की कहानी का उदाहरण लेते हैं। बच्चे ने कहानी का नाम तो नहीं लिखा, लेकिन शुरू से अन्त तक लेखन को देखें तो संवेदनशीलता के कई उदाहरण उसने लेखन में शामिल किए हैं। जैसे– एक दूसरे की मदद करना, मेंढक का बूढ़ा होना, आदि। साथ ही बच्चे ने व्यक्तियों के नाम लिखे हैं, और कार्यों की व्याख्या की है। मसलन, मैकेनिक का हथौड़ी से कार ठीक करना, आदि। साथ ही उसने शुरुआत को अन्त से जोड़ा। मैंने बच्चों को थोड़ा और सोचने के लिए प्रेरित करने हेतु उनसे कुछ प्रश्न पूछे। जैसे–

"कैसे पता मेंढक बहुत बूढ़ा था?"

बच्चे का जवाब था, "जब वो बड़ा हो गया था, और पीला हो गया था। वो बूढ़ी आवाज़ में बोल रहा था।"

फिर मैंने थोड़ा पूछना चाहा कि बूढ़ी आवाज़ कैसी होती है। इसपर पहले तो सभी बच्चे हँसने लगे, फिर अपने घर के बड़े-बूढ़ों की आवाज़ के कुछ उदाहरण रखे। उन्होंने अपने पूर्व अनुभव के आधार पर तय किया कि मेंढक की बूढ़ी आवाज़ कैसी होगी।

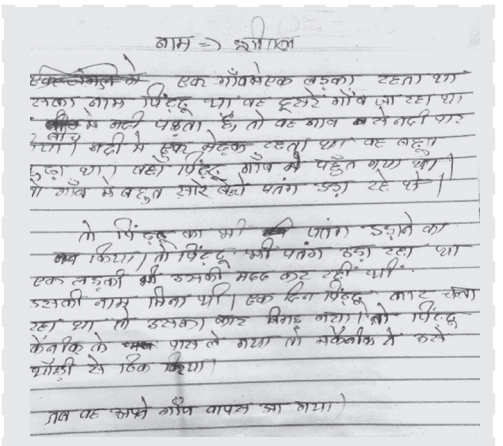

इसी प्रकार, अन्य कहानियों में भी कुछ रोचक नज़रिए हम देख सकते हैं। जैसे– एक बच्चे ने लिखा, "नाव के छेद में पेड़ के छिलके को हथौड़ी और कील की मदद से ठोक कर नाव में घूमने जाना"।

बच्चों की लिखीं कुछ अन्य कहानियाँ

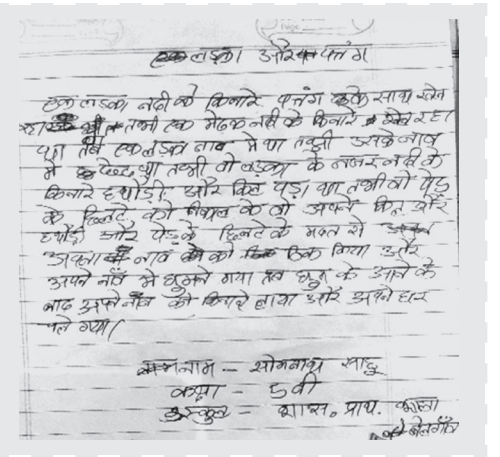

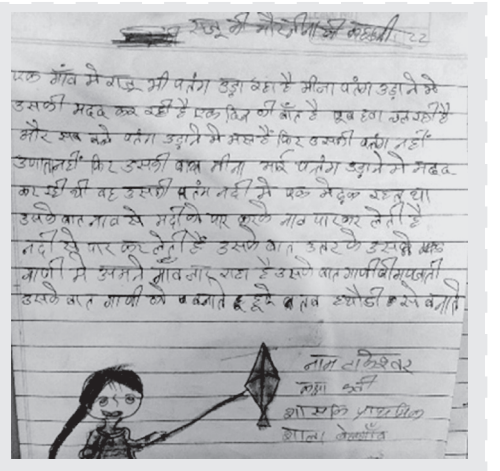

लेखन के अलग अवसर कैसे दिए गए ?

बच्चों के लिए लेखन रुचिपूर्ण बना रहे, इसके लिए उन्हें शब्दों के माध्यम से कहानी लेखन के साथ-साथ लिखने के अन्य अवसर भी दिए गए। जैसे–

अपनी स्वयं की कहानी लिखना : बच्चे कुछ शब्दों के माध्यम से रुचिपूर्ण ढंग से कहानी लेखन कर रहे थे। इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए सभी बच्चों को अपने मन से कोई भी विषय चुनने और उसपर कहानी लिखने को कहा गया। जिन बच्चों को लेखन में थोड़ी दिक़्क़त थी, उन्हें दो के समूह में कहानी बनाने, या कुछ वाक्यों में अपनी कहानी लिखने को बोला गया। दो-तीन बच्चे शुरू में झिझक रहे थे, इसलिए उनके साथ लिखने के लिए ज़बरदस्ती नहीं की गई। हाँ, उनको यह ज़रूर कहा गया कि उन्हें अपने सहपाठियों की कहानियों को ध्यान से सुनना है। और उन्होंने बाक़ी साथियों की लिखी कहानियों को ध्यान से सुना। तीन बच्चों को छोड़कर सभी ने अपने मन से कहानियाँ लिखीं।

पक्षि और पायल
एक गाँव में एक पेड़ था। और उस पेड़ में
एक चिड़िया रहती थी। और उसका नाम दुनी
चिड़िया है। वह खाना ढुढने के लिए गाँव में
चलि गई। और वह पर खाना ढुढने लगी और
ढुढते-ढुढते उसे एक पायल मिल और उसे घर
ले आई और घर में देखने लगी और उसे वहनकर
देखी और कहाँ की यहाँ बहुत सुंदर दिख रहा है
और उपने दोस्तों को दिखाई और उसे कहा कितना
अच्छा दिख रहा है।

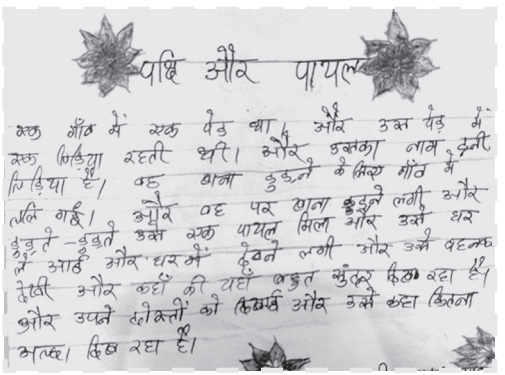

थीम-आधारित लेखन : लेखन कौशल के कुछ अन्य अनुभव देने के लिए बच्चे जब स्वतंत्र रूप से कुछ लिख रहे थे, उसकी अगली कड़ी में बच्चों की रचनात्मकता और विचारों को कुछ थीम देकर लेखन से जोड़ने की कोशिश की गई। इस कार्य के लिए कुछ थीमों का चयन किया गया जो बच्चों की कल्पनाओं, उनके व्यक्तिगत विचारों को रखने के अवसर दें। यहाँ पर बच्चों के साथ दो थीम पर किए कार्य के कुछ उदाहरण रखे गए हैं।

थीम 1 "अगर स्कूल में सिर्फ़ पढ़ाई हो और खेलों की छुट्टी बन्द हो जाए, तब क्या हो ?"

इस सवाल पर लगभग सभी ने अपनी प्रतिक्रियाएँ दीं। कुछ प्रतिक्रियाएँ काफ़ी रोचक

पढ़ाई एक अच्छी चीज़ है लेकिन
ज्यादा पढ़ाई से हमारे दिमाग में कुछ
परेशानियां भी हो सकती है। अगर
ऐसा तो किसि विद्यालय में नहिं होना
चाहिए। अगर मेरे साथ ऐसा हो तो मैं
गुस्से से लाल पीली हो जाउगी। इस चीज़
से तो मेरा ध्यान कही और लगने लगता।

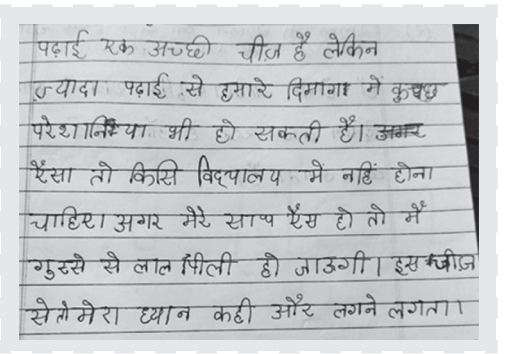

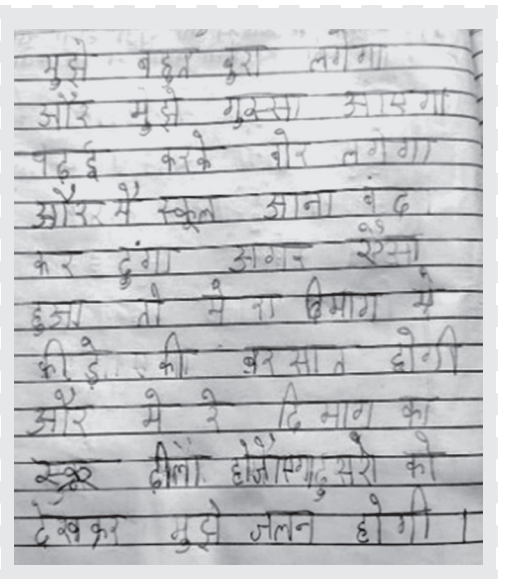

मुझे बहुत बुरा लगेगा
और मुझे गुस्सा आएगा
पढ़ई करके बोर लगेगा
और मैं स्कूल आना बंद
कर दुंगा अगर ऐसा
हुआ तो मेरा दिमाग में
कीड़े की बरसात होगी
और मेरे दिमाग का
ढीला होजाएगा दूसरे को
देखकर मुझे जलन होगी।

थीं। इन्हें पढ़कर अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि बच्चे अपने स्तर पर कितना कुछ सोचते-समझते हैं। मसलन, एक बच्चे ने लिखा कि ज़्यादा पढ़ने से दिमाग़ में परेशानियाँ पैदा हो सकती हैं। इसी तरह कुछ अन्य बच्चों की प्रतिक्रियाएँ थीं कि पढ़ना भी ज़रूरी है, मगर खेलने में मज़ा भी आता है। एक बच्चे ने तो दिमाग़ में कीड़े पड़ने की बात तक लिख डाली। उनके लेखन के कुछ उदाहरण अगले पेज पर दिए गए हैं।

थीम 2 "अगर तुम्हें अपने गाँव के नियम-क़ानून बनाने का मौक़ा मिल जाए, तुम क्या नियम बनाओगे ?"

इस थीम पर बच्चों के लेखन के बाद उनसे यह चर्चा की गई कि उस नियम को बनाने की

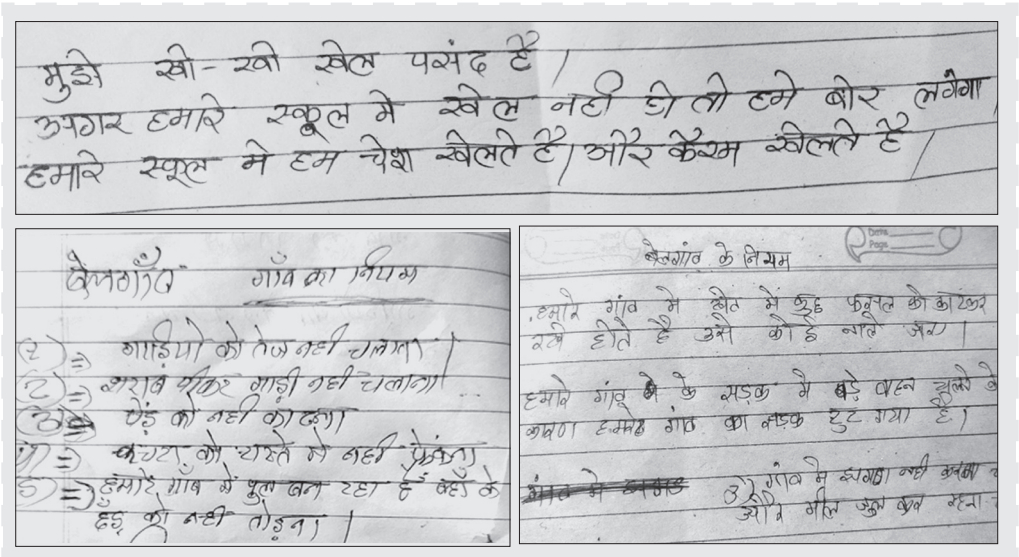

वजह क्या रही। इसपर बच्चों ने कुछ अनुभव साझा किए। मसलन, शराब पीकर बहुत झगड़ा करते हैं, इसलिए शराब नहीं पीना है; गाँव में पुल बनेगा तो सबको अच्छा लगेगा, इसलिए पुल की छड़ को नहीं तोड़ना है; आदि।

इसी तरह की कुछ अन्य थीम हम अपनी कक्षा के अनुसार चुन सकते हैं। जैसे– अगर पेड़ हमारी तरह चलने-फिरने लगते तो क्या होता; अगर तुम पक्षियों की तरह उड़ने लगते तो तुम क्या-क्या करते, कहाँ-कहाँ जाते; तुम्हें अपने स्कूल के नियम बनाने हों तो क्या-क्या शामिल करोगे; आदि। ऐसी कई थीम हम बच्चों के स्तर अनुसार चुन सकते हैं।

बच्चों के क्रियात्मक लेखन को कक्षा में स्थान देना

बच्चे जो कुछ भी लिखते या चित्रों में गढ़ते हैं, उसे वो ख़ुद से जोड़कर देख व समझ पाते हैं। इस लिहाज़ से बच्चों द्वारा जो कुछ भी कहानियों के तौर पर लिखा गया, उसे उनकी कक्षा में जगह देना, उनके लिए पठन-समृद्ध माहौल बनाने का अच्छा तरीक़ा हो सकता है। इसलिए कक्षा में अब तक लिखीं बच्चों की कहानियों को पत्रिका के तौर पर लगाया गया। इस कार्य की ज़िम्मेदारी स्वयं बच्चों की थी। वे जो चाहें पत्रिका का वह नाम देकर अपनी लिखी कहानियों को उसमें लगा सकते थे। इस कार्य का उद्देश्य यह भी था कि बच्चे एक दूसरे की कहानियों को पढ़ें, कक्षा में उनके लिखे प्रिंट हों जिन्हें बच्चे समझ के साथ, और अपने सन्दर्भ से जोड़कर पढ़ें। इस प्रक्रिया में बच्चों से बातचीत को भी शामिल किया जा सकता है कि एक दूसरे की कहानियों को किसने-किसने पढ़ा।

बच्चों के लेखन पर सुझाव

इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों के कार्य को देखने पर हम समझ पाएँगे कि बच्चे अपनी रचनात्मकता को शामिल करते हुए अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से लिख रहे थे। बतौर शिक्षक यहाँ महत्त्वपूर्ण होता है कि हम प्रत्येक बच्चे के लेख पर कुछ ऐसी प्रतिक्रियाएँ अवश्य दें जो उन्हें प्रेरित करें, और आगे बढ़ने में मदद करें। इसके अन्तर्गत उनके द्वारा लिखी कहानी के पात्रों के बारे में कुछ शुरुआती बातचीत की जा सकती है। इसी तरह, उन्होंने जो लिखा है उसमें जो अच्छा है उसकी तारीफ़ करना, तथा कहाँ और अच्छा हो सकता है इस बारे में बातचीत। मसलन, कौन-से विचार बढ़िया थे, कौन-से संवाद रोचक थे (मेंढक का बूढ़ा होना, पत्तों से नाव को ठीक

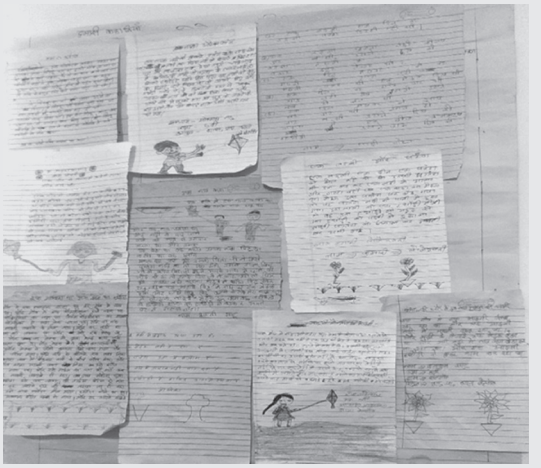

करना), आदि। बच्चों के कार्य को कक्षा में लगाने से उनका पठन और लेखन से जुड़ाव भी बन सकेगा। साथ ही यह समझना कि लेखन में रचनात्मकता एक अहम हिस्सा होता है जिसे हम कभी-कभी रचनात्मक लेखन के तहत भी देख सकते हैं, फिर चाहे वो कभी किसी भी थीम पर आधारित हो या अपने स्वतंत्र रूप से कुछ लिखने में। महत्त्वपूर्ण यह भी है कि शुरुआती दिनों में बच्चों के लेखन को किसी शैली में बाँधने की बजाय ऐसे ज़्यादा-से-ज़्यादा अवसर दिए जाएँ जहाँ वो अपने विचारों और अपनी बातों को अपने अनुभव अनुरूप लिख सकें।

बच्चों के साथ इस कार्य के दौरान हुए कुछ व्यक्तिगत अनुभव

इस पूरी प्रक्रिया में लगभग सभी बच्चे शामिल हुए। दो दिन बीत जाने के बाद दिन के आख़िरी घण्टे में बच्चे ख़ुद ही कहानी बनाने, लिखना शुरू करने की पहल करते। 3 से 4 दिनों में ही सभी बच्चों ने 20 से ज़्यादा कहानियाँ बनाईं। महत्त्वपूर्ण यह था कि बच्चे इस कार्य में आनन्द ले रहे थे, और अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से लिख रहे थे। इस प्रक्रिया से यह भी समझ आता है कि यदि बच्चों को सहज माहौल और अवसर उपलब्ध कराए जाएँ तो वो पढ़ने-लिखने की इन तमाम कोशिशों में मन से शामिल होते हैं। बतौर शिक्षक भी एक अकादमिक सत्र के दौरान यह प्रयास किया जाना चाहिए कि बच्चों को कक्षा में ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाएँ जिनसे बच्चे अपने मन की बात कह सकें, लिख सकें, और इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया बोझिल न होकर आनन्दमय बन सके।

हुमा नाज़ सिद्दीकी 9 सालों से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं। आपने रुंगटा कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, भिलाई में सहायक प्रोफ़ेसर के रूप में विद्यार्थियों को बायोटेक्नोलॉजी पढ़ाया है। विज्ञान लेख लिखती हैं और कई शोध पत्र भी लिखे हैं। 6 साल से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में विज्ञान, भाषा और गणित विषय में काम कर रही हैं।

सम्पर्क : huma.siddiqui@azimpremjifoundation.org